भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
केन्द्रीय कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

10 अप्रैल, 2022

जाति उन्मूलन, पूंजीवाद–साम्राज्यवाद विरोधी, ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवाद विरोधी संकल्प के साथ बाबा साहेब अंबेडकर की जयंती मनावें!

ब्राह्मणवादी हिंदुत्व कट्टरपंथी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ परिवार की भारतीय जनता पार्टी एवं उसकी सरकार द्वारा आगामी 14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती बड़े धूमधाम से मनाने के प्रधान मंत्री मोदी की घोषणा के पीछे के ढोंग को समझने एवं जाति उन्मूलन, पूंजीवाद–साम्राज्यवादविरोधी, ब्राह्मणवादी हिंदुत्व कट्टरपंथविरोधी संकल्प के साथ अंबेडकर जयंती मनाने का भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) आह्वान करती है. सतही तौर पर अंबेडकर जयंती मनाते हुए, अंबेडकर के सीख के असली सारांश–जाति उन्मूलन, हिंदू धार्मिक कट्टरता(मनु धर्मशास्त्र) एवं पूंजीवाद के विरोध से दलितों को पथभ्रष्ट करने के हिंदुत्व फासीवादी ताकतों की साजिशों का भंडाफोड़ करें.

यह जगजाहिर है कि आरएसएस एवं भाजपा अपने जन्म से ही हिंदुत्व कट्टरपंथी हैं. वह सैद्धांतिक तौर पर ही नहीं रोजवारी व्यवहार में भी अंबेडकर के विचारों का कट्टर विरोधी हैं. करीबन पिछले 8 सालों से केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा ब्राह्मणीय हिंदुत्व कट्टरपंथी भारत के निर्माण की दिशा में फासीवादी तरीके से कदम–दर–कदम आगे बढ़ रही है. इसे लोकलुभावन 'नया भारत' नाम दिया गया है. भाजपा सरकार इन 8 सालों में दलित–आदिवासी–मुसलमान–महिला विरोधी नीतियों के अलावा किसान–मजदूर–मध्यवर्ग विरोधी नीतियों पर बेरोकटोक व अभूतपूर्व तेजी से अमल करती आ रही है जो वास्तव में भगवा रंग में रंगी एलपीजी नीतियां ही हैं.

तीन तलाक रद्द कानून, धारा–370 एवं 35ए रद्द करना, अयोध्या में राममंदिर का शिलान्यास, दलितों व आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों का खुला उल्लंघन करते हुए कई कानून बनाने का विफल प्रयास, आरक्षण समाप्त करने या विभिन्न तरीकों में आरक्षण के लाभार्थियों को उससे वंचित करने की साजिशें, गोरक्षा के नाम पर मॉब लिंचिंग, दलितों, आदिवासियों के खान–पान की आदतों, रहन–सहन, रीति–रिवाजों, विश्वासों पर हमलें, पाबंदियां व उनकी अवहेलना, अंधराष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के नाम पर दलितों, आदिवासियों एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों, विशेषकर बालिकाओं को शिक्षा से वंचित रखना, किसान विरोधी व देशद्रोही तीन कृषि कानूनों के जरिए देश की खेती को बर्बाद करने का विफल प्रयास आदि जन विरोधी, देश विरोधी नीतियों पर अमल करते हुए अंबेडकर जयंती मनाकर उत्पीड़ित जनता खासकर दलितों को हिंदुत्व का हिस्सा बनाने का पुरजोर प्रयास किया जा रहा है जिसके खिलाफ अंबेडकर ने आजीवन संघर्ष किया था. मनु धर्मशास्त्र को जलाने वाले अंबेडकर को मनुवादी अपने दायरे में समेटने की कोशिश कर रहे हैं जिसका कड़ा विरोध करने की जरूरत है.

अंबेडकर द्वारा जिस संविधान में दलितों व आदिवासियों के लिए कुछेक अधिकार शामिल कराया गया था, भाजपा सरकार द्वारा उनका घोर उल्लंघन ही नहीं, उन्हें समाप्त करने की कोशिशें लगातार की जा रही है. यहीं अंबेडकर के उस महत्वपूर्ण व आज की पृष्ठभूमि में प्रासंगिक वक्तव्य पर हमें गौर करना चाहिए जिसमें उन्होंने कहा था कि यदि संविधान पर सही अमल नहीं होता है, संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन होता है तो वे पहले व्यक्ति होंगे जो संविधान को जला डालेंगे.

यहां यह बताना भी लाजिमी होगा कि कई दलित नेता अंबेडकर का जाप करते हुए भाजपा के बगल में पहुंचकर अपने स्वार्थ की रोटी सेंक रहे हैं और सत्ता में भागीदार बनकर पीड़क जातियों, वर्गों की सेवा में लगे हैं. पीड़ितों पर शोषण–दमन का भी हिस्सा बन रहे हैं. इनका पर्दाफाश करने व विरोध करने की सख्त जरूरत है.

हमारी पार्टी देश की तमाम उत्पीड़ित वर्गों व सामाजिक तबकों खासकर दलित जनता का आह्वान करती है कि वे एक ओर मोदी द्वारा अंबेडकर को हिंदुत्व कट्टरपंथी ताकतों के घेरे में लेने का हर संभव विरोध करें, ब्राह्मणीय हिंदुत्व फासीवादी ताकतों के फैलाव को रोकें एवं जाति उन्मूलन तक ही सीमित न होकर उसकी जड़ वर्तमान जाति आधारित अर्ध–औपनिवेशिक, अर्ध–सामंती व्यवस्था को उखाड़ फेंककर, नवजनवादी राज्यसत्ता जिसमें जातिप्रथा को समाप्त करने का मजबूत आधार होगा, के निर्माण के लिए दलाल नौकरशाही पूंजीपति, सामंतवाद व साम्राज्यवादविरोधी वर्ग संघर्ष और जनयुद्ध में शामिल होवें. दलितों को दिग्भ्रमित करने, सही रास्ते पर आगे बढ़ने से रोकने, चुनावी राजनीति में अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए आगे आने वाली कई तरह की अवसरवादी राजनीतिक पार्टियों, ताकतों की कोशिशों को नाकाम करें.

अभय

(अभय)
प्रवक्ता,
केन्द्रीय कमेटी,
भाकपा (माओवादी)